Nakshalbari College

Dept.of Hindi

सम्प्रेषण

- सम्प्रेषण का अर्थ,
- परिभाषा,
- विशेषताएँ,
- महत्व एवं प्रकार

सम्प्रेषण का अर्थ

- सम्प्रेषण शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के **'कम्यूनीस'** शब्द से हुई है जिसका अर्थ है **'सामान्य'**। इसे अंग्रेजी भाषा में **'Communication'** कहते हैं।
- सम्प्रेषण क्रिया के अन्तर्गत प्रेषण क्रिया प्रभावी होता है। यह दो पक्षीय या बहु पक्षीय होता है। सम्प्रेषण की क्रिया में भेजने वाला **'प्रेषक'** और प्राप्त करने वाला **'प्राप्तकर्ता'** कहलाता है।
- शिक्षक द्वारा अपनी बातों को छात्र तक पहुँचने की प्रक्रिया ही सम्प्रेषण कहलाती है।

सम्प्रेषण की परिभाषा

- कीथ के अनुसार “सम्प्रेषण सूचनाओं एवं समझ को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाने की क्रिया है।”

सम्प्रेषण की विशेषताएँ एवं महत्व

- सम्प्रेषण एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है।
- सम्प्रेषण एक गत्यात्मक प्रक्रिया है।
- सम्प्रेषण दो पक्षीय होता है एक संदेश भेजने वाला और दूसरा संदेश ग्रहण करने वाला होता है लेकिन शिक्षण प्रक्रिया में तीन पक्ष होते हैं।
- सम्प्रेषण की प्रक्रिया में अनुभवों की साझेदारी होती है।
- सम्प्रेषण एक पारस्परिक सम्बंध स्थापित करने की प्रक्रिया है।
- सम्प्रेषण में **'विचार विनिमय'** तथा **विचार विमर्श** आवश्यक हैं।
- सम्प्रेषण 'ज्ञान स्थानान्तरण' करने की प्रक्रिया है।

सम्प्रेषण के प्रकार

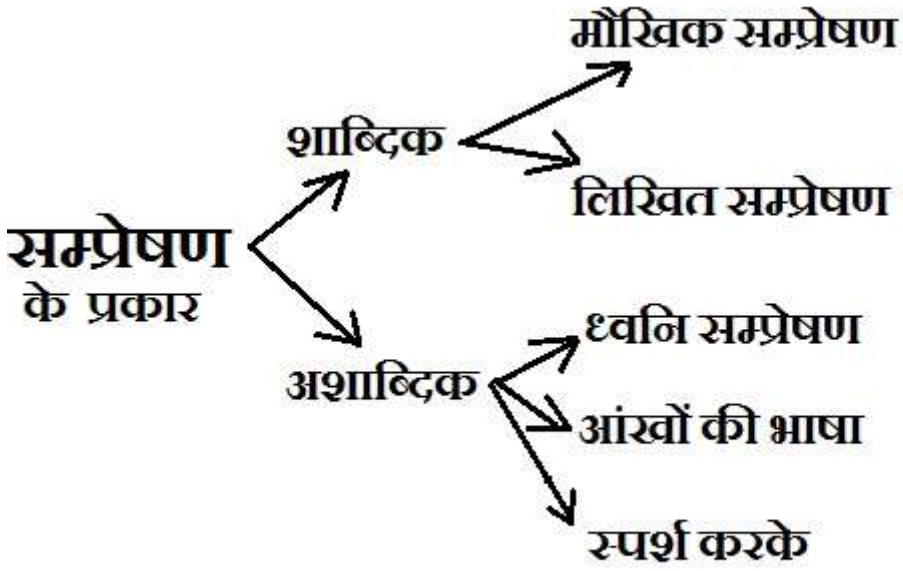

संप्रेषण की आवश्यकता एवं महत्व

- संप्रेषण संस्था के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक है यह उसके विकास और उत्तरोत्तर उन्नति की ओर ले जाने में सक्षम है अतः प्रबंधक और प्रशासन की दृष्टि से उपयोगी है और संगठन को प्रभावशाली बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करता है संप्रेषण को आवश्यकता एवं महत्व को हम निम्नलिखित रूप में व्यक्त कर सकते हैं।
- (१) विचारों के आदान-प्रदान में सुविधा- संप्रेषण के माध्यम से प्रधानाध्यापक शिक्षक छात्र कर्मचारी एवं अन्य अधिकारीगण के मध्य विचारों का भावों का सूचनाओं में आदान-प्रदान सुगमता से हो जाता है। निर्धारित समय और उपयुक्त व्यक्ति को उपयुक्त सूचना मिलने से उस की प्रभावशीलता में वृद्धि होती है और विकास में उत्तरोत्तर उन्नति के शिखर पर पहुंचने का प्रयास संभव हो पाता है।

  (२) प्रदीपप्रदीप विचारधाराओं की समाप्ति- संप्रेषण के द्वारा एक दूसरे व्यक्ति के मन में बैठी विरोधी विचारधारा समाप्त हो जाती है जो व्यक्ति एक दूसरे के प्रति मन में कटुता बनाए रखते हैं सम्प्रेषण उस कटुता को दूर करता है इस प्रकार विकास का एक सौंदर्य पूर्ण वातावरण बनता है इससे संप्रेषण की उपयोगिता में वृद्धि होती है

  (३) संस्था के उद्देश्यों की प्राप्ति में आपसी सहयोग--संप्रेषण अधिकारी और कर्मचारी के मध्य फैली गलतफहमियों को दूर करता है दोनों आपस में बातें करके अथवा सूचना के आदान प्रदान से एक दूसरे के साथ सहयोग करने को तत्पर हो जाते हैं और अधिकारी भी कर्मचारी हित पर ध्यान देने लगते हैं इस प्रकार संस्था का विकास संभव हो पाता है और संप्रेषण की सार्थकता सिद्ध हो जाती है।

  (४) प्रबंध को शक्तिशाली बनाना--संप्रेषण से प्रबंधन और प्रशासन शक्तिशाली बनते हैं आपसी विचार-विमर्श से उचित सुझाव से विविध समस्याओं एवं कठिनाइयों का समाधान खोज लिया जाता है समस्या का समाधान खोजना प्रबंध को शक्तिशाली बनाने में सहायता करता है इसे संप्रेषण की उपयोगिता में वृद्धि होती है।

  (५) नेतृत्व क्षमता का विकास--संप्रेषण के माध्यम से नेतृत्व क्षमता विकसित होती है एक दूसरे के हितों का ज्ञान होने से संगठन बनता है यह संगठन किसी एक व्यक्ति द्वारा संचालित होता है यह व्यक्ति संप्रेषण के द्वारा अधिकांश को उसके हित को सामने रखते हुए अपने लिए अनुयायी तैयार करता है इस प्रकार नेतृत्व क्षमता का विकास होता है इससे संप्रेषण की उपयोगिता में और अधिक वृद्धि होती है।
-

धन्यवाद।

Natraj Gupta

Assistant Professor

Dept.of Hindi

Nakshalbari college

This Power Point Presentation is solely for the purpose of classroom teaching and the content has been taken from books and Internet open access sources.